IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निर्माण क्षेत्र के श्रमिकों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन जबलपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. संदीप कुर्मी
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र
शास.श्याम सुंदर अग्रवाल स्नातकोतर महाविद्यालय
सिहोरा जबलपुर

परिचय

जबलपुर जिला मध्यप्रदेश के प्रमुख नगरों में से एक है |जबलपुर जिला तेजी से बढ़ता हुआ एक महानगर है इसके सभी दिशाओं में स्थित जिले अपनी अनेक आवश्यकताओं के लिए जबलपुर पर निर्भर हैं। प्रस्तुत शोध कार्य जबलपुर जिले में निर्माण क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति को जानने का प्रयास है| निर्माण कार्य एक अनवरत चलने वाला कार्य है निर्माण कार्य में सबसे ज्यादा श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है,जिसमे दोनों प्रकार के कुशल और अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है । निर्माण कार्य से तात्पर्य सभी प्रकार के निर्माण से है जैसे सरकारी व निजी भवन,सड़क,पुल,पुलिया,परिसर इत्यादि से है ।

श्रम और श्रमिक

श्रम उत्पादन का एक साधन है|श्रम की गरिमा प्राचीन काल से ही है । चराचर जगत में जो भी कुछ निर्मित है वह श्रमिक द्वारा ही निर्मित है जिसके वास्तविक सुखों और उपभोग से वह सदा ही वंचित रहता है श्रमिक के श्रम का पूरा हक़ भी उसे कभी नही मिल पाता|मजदूरी के रूप में उसका भुगतान कर देना एक भ्रम है | शदियों से मजदूरों पर अत्याचार और शोषण हुआ है और हो रहा है |उत्पादन लागत को कम करने के लिए मजदूर और मजदूरी पर हमेशा ही तलवार लटकती रहती है आए दिन कभी भी उसे छंटनी का शिकार होना पड़ता है |प्राय: ये श्रमिक जबलपुर और इसके समीपवर्ती जिलों-डिंडोरी,मंडला,सिवनी,नरसिंहपुर,कटनी से आते हैं ।ज्ञात हो की ये जिले आदिवासी बहुल हैं अधिकांशत: लोग गरीबी के कारण पर्याप्त शिक्षा नही प्राप्त कर पाते हैं ये आदिवासी बहुत सीधे और सरल स्वभाव के होते हैं । कई श्रमिक किराये के मकान में रहतें है तो कुछ सप्ताहांत में अपने घर चले जाते हैं । कुछ श्रमिक जबलपुर से 30-40 किलोमीटर दुरी से प्रतिदिन आते हैं । श्रमिकों को रोज काम नही मिलता है जिससे उन्हें निराश होकर वापस जाना पड़ता है । दैनिक मजदूरों के लिए मजदूरी निश्चित नही है जहां पर सौ से पचास रूपये तक का अंतर पाया जाता है । महिला मजदूरो को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है ।

श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से आशय उनके सुखद और संतोषजनक स्थिति से है । इसके अंतर्गत मजदूरी,काम की निरंतरता,कार्य के घंटे,शिक्षा और प्रशिक्षण,कार्य स्थल पर सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम,स्वास्थ्य सुविधाएँ और सामाजिक सुरक्षा इत्यादि से है ।श्रमिकों का भी परिवार होता है श्रमिक अपने परिवार को पर्याप्त समय नही दे पाते हैं । कई परिवारों में पति-पत्नी दोनों कार्यरत होते हैं ।ऐसी स्थिति में आय तो बढ़ती है किन्तु बच्चों के पालन में कठिनाई होती है । श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक दशा में सुधार की आवश्यकता है जिससे गरीबी दूर करने,आर्थिक विकास को प्रोत्साहन और सामाजिक-आर्थिक न्याय के उदेश्यों को प्राप्त किया जा सके । सर्वे के दौरान श्रमिकों ने यह बताया करोना काल के दौरान सरकार द्वारा उन्हें सरकार द्वारा मुफ्त राशन प्रदान किया गया । ऐसे श्रमिक भी मिले जिन्हें 60 वर्ष की आयु के पश्चात वृद्धावस्था पेंशन 600 रूपये मिल रही है लेकिन यह पर्याप्त नही है ।

जबलपुर

पूर्वी मध्यप्रदेश में जबलपुर एक प्रमुख औद्योगिक नगर है ,जहाँ अनेक औद्योगिक क्षेत्र व औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत है| जबलपुर में खनिज खनन का कार्य होता है । जबलपुर नगर के चारों तरफ घने वन है जहां अनेक प्रकार की लकड़ियाँ पाई जाती है । जबलपुर में लकड़ी चिराई का उद्योग है । यहाँ आधारताल और मंडला रोड पर मनेरी प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं । जबलपुर के ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी गुणवत्ता का हरा मटर का बहुतायत से उत्पादन होता है जिसे कई राज्यों में भेजा जाता है।

जबलपुर के प्रमुख लेबर चौक

1. श्रीनाथ की तलैया
2. त्रिपुरी चौक गढ़ा
3. शीतला माई चौक-घमापुर
4. कृपाल चौक-गुप्तेश्वर
5. रांझी चौक
6. कांचघर चौक
7. दीनदयाल चौक आई एस बी टी
8. आधारताल चौक
9. शोभापुर चौक
10. महाराजपुर चौक
11. छोटी लाइन फाटक
12. मारुती भवन-यादव कालोनी चौक
13. आई टी आई चौक
14. पेंटीनाका चौक-सदर

शोध प्रविधि

शोध कार्य के लिए प्रश्नावली तैयार करके विभिन्न लेबर चौक पर जाकर सुबह के समय जब श्रमिक मिलतें है उस समय उनसे शोध सम्बन्धी आवश्यक जानकारी एकत्रित की गई है |इस शोध कार्य के लिए 50 श्रमिकों की जानकारी एकत्रित की गई है |इस कार्य में पुरुष और महिला दोनों श्रमिकों से जानकारी ली गई है |यह शोध कार्य मार्च 2023 में होली के त्यौहार के बाद किया गया है |प्रश्नावली के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया

गया की सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की कौन सी सुविधाएँ उन लोगों को प्राप्त हो रही है |मजदूरी कार्य के समय उन लोगों को होने वाली समस्याओं की भी जानकारी एकत्रित की गई |कई प्रश्नावली निर्माण स्थल पर ही जाकर भरी गई और उनकी स्थिति को जानने का प्रयास किया गया। विभिन्न जानकारियों का आगे वर्णन किया गया है।

शोध कार्य का विश्लेषण

सारणी -1. परिचय जाति वर्ग

क्र.	जाति /वर्ग	संख्या -50
1	सामान्य	1
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	14
3	अनुसूचित जाति	15
4	अनुसूचित जनजाति	20

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

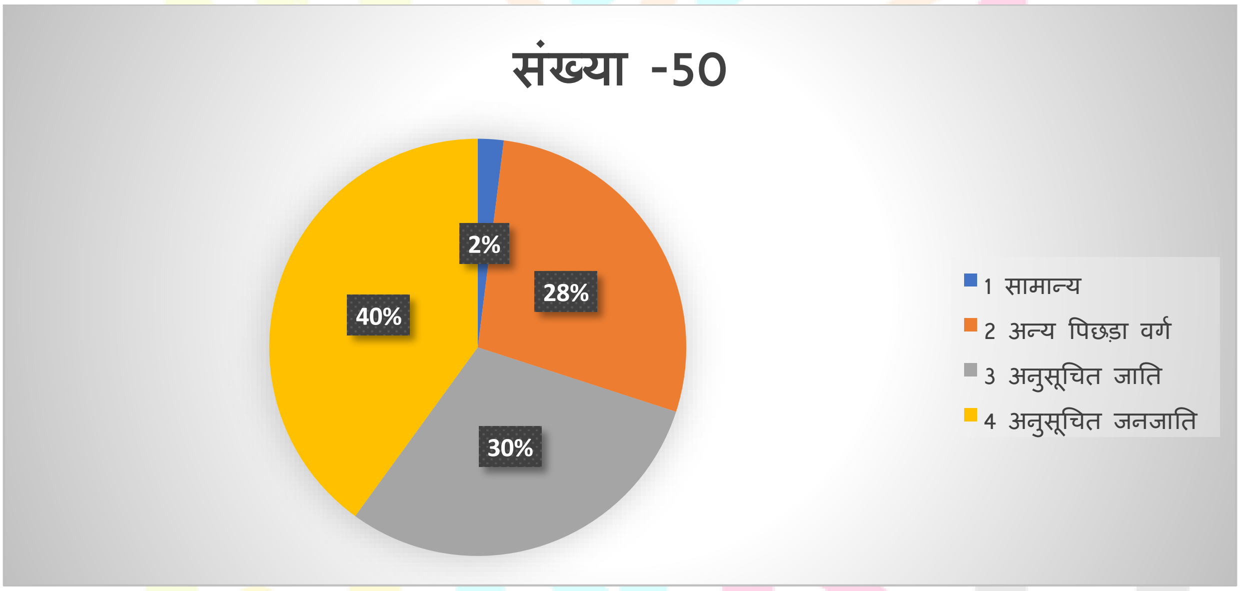

शोध सर्वे में एकत्र जानकारी के आधार से यह ज्ञात होता है की कुल 50 लोगों में से सामान्य वर्ग से 1,अन्य पिछड़ा वर्ग से 14, अनुसूचित जाति से 15, अनुसूचित जनजाति से 20 लोग है। स्पष्ट है की सबसे कम संख्या सामान्य वर्ग से 1 और सर्वाधिक संख्या अनुसूचित जाति से 20 श्रमिक है।

सारणी -2. सामान्य परिचय

क्र.	स्थिति	संख्या-50
1	विवाहित	38
2	अविवाहित	12
3	आवास स्वयं का	22

4	किराये का	28
5	खेती है	09
6	खेती नही है	41

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका में श्रमिकों प्राप्त जानकारी दी गई है कुल 50 में से 12 श्रमिक अविवाहित थे जबकि 38 श्रमिक विवाहित थे। यह महत्वपूर्ण है की 22 श्रमिक के स्वयं के आवास हैं जबकि 28 श्रमिक किराये के मकान में रहते हैं। इसी प्रकार 9 श्रमिक ऐसे थे जिनके पास खेती की जमीन है जब खेतों में काम नहीं रहता है तब वे लोग जबलपुर नगर में आकर मजदूरी का कार्य करते हैं। ज्यादातर श्रमिक जो ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिदिन आतें है वे संध्या में घर वापस चले जाते हैं।

सारणी -3. आर्थिक स्थिति

क्र.	मासिक आय ₹ में	संख्या-50
1	5000-10000	29
2	10000-15000	21
3	15000-20000	-
4	20000 से उपर	-

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका क्र.3 में श्रमिकों को मासिक आधार पर प्राप्त होने वाली आय को जानने का प्रयास किया गया है 29 श्रमिक ऐसे थे जिनकी आय 5000 से 10000 के स्तर पर पाई गई। 21 श्रमिको की आय 10000से 15000 के स्तर पर पाई गई। ज्ञात हो की श्रमिकों को माह के पुरे 30 दिन काम नही मिलता है जिसके कारण उनका आय स्तर में वृद्धि नही हो पाती है।

सारणी -4. सामान्य आर्थिक स्थिति

क्र.	आर्थिक स्थिति	संख्या-50
1	बचत खाता है	42
2	बचत खाता नही है	8
3	कर्ज लिया है	7
4	कर्ज नही लिया है	43

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका 5. में श्रमिकों की सामान्य सामाजिक - आर्थिक दशा को बताया गया है 42 श्रमिको के पास बैंक में बचत खाता है जबकि 8 लोगों के पास बचत खाता नही है। 7 श्रमिकों ने बैंक से कर्ज लिया है।

सारणी -5. सामान्य सामाजिक -आर्थिक स्थिति

क्र.	आर्थिक स्थिति	संख्या-50
1	बच्चे स्कूल जाते है	12
2	बच्चे स्कूल नही जाते है	38
3	घर में शौचालय है	50
4	घर में शौचालय नही है	NIL
5	बीमा है	NIL
6	बीमा नही है	50

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका 5. में श्रमिकों की सामान्य सामाजिक - आर्थिक दशा को जानने का प्रयास किया गया है तालिका में ऐसे श्रमिक जिनके बच्चे स्कूल जाते हैं की संख्या 12 है बाकि के श्रमिको के बच्चे पहले ही शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं ,छोटे हैं या श्रमिक अविवाहित हैं ।प्राय: सभी श्रमिको के यहां शौचालय है । आगे तालिका में श्रमिकों के बीमा के सम्बन्ध में जानकारी दी गई है किसी भी श्रमिक ने बीमा नही कराया है । श्रमिकों को बीमा के जानकारी या तो पर्याप्त जानकारी नही है या फिर बीमा के क़िस्त चुकाने के लिए पर्याप्त आय नही है । श्रमिकों का बीमा न होना उनके परिवार के लिए किसी त्रासदी से कम नही है क्योंकि अनेक अवसर पर श्रमिकों को खतरनाक परिस्थिति में भी कार्य करना पड़ता है ।

सारणी -6. श्रमिकों को प्राप्त होने वाली मजदूरी की दर

क्र	व्यक्ति	मजदूरी ₹ में
1	मजदूर	300/400
2	मिस्त्री	500/600

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका 6. में श्रमिकों को प्राप्त होने वाली मजदूरी की दर को दर्शाया गया है श्रमिकों को कहीं 300 /400 ₹ प्रतिदिन मिल जाता है तो मिस्त्री को 500 /600 ₹ प्रतिदिन मिल जाता है ।

सारणी -7. सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होने वाले लोग

क्र	सरकारी योजनाओं से लाभान्वित	मजदूरी ₹ में
1	हां	50
2	नही	NIL

स्रोत :सर्वे से प्राप्त जानकारी

उपर्युक्त तालिका में सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होने वाले श्रमिकों से एकत्रित जानकारी को दर्शाया गया है प्राय: सभी श्रमिक सरकारी योजना का लाभ ले रहें हैं जिसमें सर्वाधिक मुख्य योजना है -मुफ्त राशन योजना । इसके अलावा वृद्धावस्था पेंशन योजना का लाभ भी श्रमिकों को प्राप्त हो रहा है ।

श्रमिकों की प्रमुख समस्याएँ -

सर्वे के दौरान मजदूरों द्वारा बतलाई गई समस्याएं उन्ही के शब्दों में -

1. मजदूरी समय पर नही मिलती नम्बर देख कर मोबाईल नही उठाते हैं क्या कर लेंगे हम ।
2. काम करवा लेते हैं पैसे नही देते आज नही कल ,कल नही परसों करते हैं ।
3. धूप में बारिस में काम करना पड़ता है ।
4. सरकारी मुफ्त राशन योजना में अनाज कम तौलते हैं ।
5. हाथ से कार्य करने से सरकारी योजनाओं में अंगूठा नही मिलता ।
6. हमारे पास समय कम रहता है,हम बार-बार सरकारी आफिस का चक्कर नही लगा सकते ।
7. रोज रोज काम नही मिलता, कई बार ठेकेदार पैसा खा जाते हैं ।
8. बैंक से लोन नही मिलता ।

श्रमिकों के हित-संवर्धन हेतु प्रमुख सुझाव -

1. नगर में एक श्रमिक पंजीयन कार्यालय खोला जाय जहां पर सभी स्त्री पुरुष श्रमिक का डिजिटल पंजीयन किया जाय ।श्रमिक को डिजिटल पंजीयन कार्ड दिया जाय । इसी कार्यालय में श्रमिकों द्वारा समस्त शिकायतों का समय पर निवारण किया जाना चाहिए ।
2. स्त्री पुरुष श्रमिक को समान मजदूरी को सुनिश्चित किया जाय ।
3. श्रमिकों का जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा किया जाना चाहिए ।
4. श्रमिकों के कार्यस्थल या उनके निवास स्थल पर जाकर सरकारी लाभ की योजनाओं की जानकारी दी जानी चाहिए ।
5. निर्माण कार्यस्थल मालिकों और ठेकेदारों पर शासन को कठोरता से कार्यवाही करना चाहिए 6. श्रमिक के परिवार के लिए स्वास्थ्य और बच्चों के मुफ्त शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए ।
7. श्रमिकों को सस्ती ब्याज दर पर ऋण का प्रबन्ध होना चाहिए ।

संदर्भ सूची -

1. आहूजा राम (2015) सामाजिक मुद्दे रावत पब्लिकेशन pp191
2. सेनगुप्ता व्ही. (2017) महिला श्रम और पलायन के प्रश्न IJRRSS VOLUME 5 ISSUE 4 PRINT ISSN 2347-5145 ONLINE ISSN 2454-2687
3. सिद्दीकी शाहेदा, गुप्ता दीपिका (2018),” कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की प्रमुख समस्या एवं निदान” IJSRSET volume 4 ISSUE 7 PRINT ISSN 2395-1990 ONLINE ISSN 2394-4099
4. आहूजा राम (2020) सामाजिक समस्याएं रावत पब्लिकेशन pp23
5 https://jabalpur.nic.in/district-produce